Interpretation of vedas

श्रीमती वीणा वर्मा : (मध्य प्रदेश) : उपसभापति महोदया, मैं आज अपने इस विशेष उल्लेख द्वारा सदन के माध्यम से सरकार का ध्यान 7 मई, 1994 के जनसत्ता अखबार में ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य वासुदेवानंद सरस्वती के जयपुर में दिये गये उस बयान की ओर आकृष्ट करना चाहती हूं जिसमें उन्होंने शास्त्रों में महिलाओं के वेदपाठ करने पर कहीं रोक न होने का हवाला दिया है। उसे मैं यहां अखबार से उद्धृत करना चाहूंगी :

"महिलाएं वेदों का पठन पाठन अध्ययन करती रही हैं। कई विदुषी महिलाएं वेदों की ज्ञाता रही हैं। गार्गी और याज्ञवल्क्य का वेदों पर संवाद तो प्रसिद्ध है। पर महिलाओं के वेदों का घोष करने का निषेध है। वेद घोष अलग अलग प्रकार और प्रक्रिया है" इसी में आगे कोट कर रही हूं–

"मूलाधारा से शब्द उठाना ब्रह्मचर्य को बल देना है। यह महिलाओं के लिए हितकारी नहीं है। वेद घोष से मातृत्व की हानि होती है। गर्भधारण की क्षमता में कमी आती है। इसीलिए आचार्यों ने व्यवस्था दी कि मातृत्व की रक्षा के लिए महिलाओं को वेद घोष नहीं करना चाहिए। उनके वेद पढ़ने पढ़ाने का निषेध नहीं किया गया है"

महोदया, आपको व सदन को याद होगा कि कुछ माह पूर्व कलकत्ते के एक समारोह में जगद्गुरु शंकराचार्य श्री नीलाचार्य द्वारा एक महिला को वेद घोष करने से रोका गया था तथा शंकराचार्य जी के समय समय पर काफी भ्रामक विचार महिलाओं के बारे में, महिलाओं को नौकरियों में लने के सख्त खिलाफ होने के तथा अन्य महिलाओं संबंधी आपत्तिजनक बयान बार बार अखबारों में प्रकाशित होते रहे हैं। एक और बयान जो 4–2–94 की जनसत्ता में छपा था उसमें उन्होंने कहा कि–

"महिलाओं को बतहाशा अधिकार मिलने से पशुता फैलने का डर है"।

महोदया, वेदन पाठ को लेकर इस तरह के परस्पर विरोधी बयान इक्कीसवीं शताब्दी के अवसान काल में एक बार फिर महिलाओं की स्थिति के संबंध में भ्रामकता को हवा देते हैं। साथ ही हिन्दू पुनरुत्थानवादी ताकतों की सक्रियता को पुष्ट करते हैं। समय, इतिहास एवं काल के शाश्वत प्रवाह में बहुत पीछे छूट चुके विचारों, भावों को सुनियोजित ढंग से फिर से उभारकर आखिर हम गड़े मुर्दे क्यों उखाड़ना चाहते हैं.. **(समय की घंटी)** माननीय उपसभापति महोदया, मैं दो मिनट का अतिरिक्त समय चाहूंगी। यह गम्भीर विषय है। बार बार महिलाओं के विषय में कुछ शीर्ष पदों से इस तरह के भ्रामक विचारों को प्रसारित किया जाना महिलाओं के विकास को, उनके मानसिक विकास को रोक देता है।

जहां तक वेदों की स्थिति है वे तो हमारे आप्त ग्रंथ है और उनमें अकल्याणकारी भाव कभी नहीं रहा। उससे समग्र कल्याण की बात हमेशा की गई। वेद पाठी महिलाओं का निषेध तो नहीं ही रहा पर वेद घोष से उन्हें अवश्य अलग रखा गया था.. **(व्यवधान)**

SHRI M. A. BABY (Kerala,: The lady Parliamentary Affairs Minister is leaving. She has to give some assurance on this. At least, she can associate herself on such an important issue.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The other Minister are there. The Government is present there. A lot of Ministers are there.

श्रीमती वीणा वर्मा : यह पूर्णतः वैज्ञानिक प्रक्रिया के कारण था। वेद घोष से अलगाव को ही कुछ लोगों द्वारा वेद पाठ का विरोध मान लिया गया है और उसे हवा दी गई और इतना तो सच था कि पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था में विदुषी, वेदज्ञ होते हुए भी महिलाओं को उतना महत्वपूर्ण स्थान

[श्रीमति वीणा वर्मा]

नहीं मिला और उनके मानसिक स्तर की सराहना करते हुए भी शारीरिक संरचना के आधार पर कहीं-कहीं उन्हें खारिज कर दिया गया। यह बात और ही है . . . (व्यवधान)

उपसभापति: आप क्या कह रही हैं किसी की समझ में शायद आ नहीं रहा है, इसलिए कोई सुन नहीं रहा है। आप जरा प्वाइंटेड तरीके से बोलिए तो समझ में आएगा।

श्रीमती वीणा वर्मा: मैं यह कहूंगी कि 21वीं सदी में जाती हुई महिला जबकि हमारी सरकार शिक्षा और उनकी जागृति के बारे में चिंतित है, उनको नौकरियों में लाने के बारे में चिंतित है तो इस तरह के शीष पदों पर बैठे हुए शंकराचार्यों द्वारा महिलाओं के बारे में भ्रामक विचार बार-बार दिए जाते हैं इनकी सत्यता की जांच होनी चाहिए और ऐसे भ्रामक विचारों की निष्पक्ष जांच कराएं तो जो भ्रांतियां फैल गई हैं महिलाओं की संवेदना को उभार कर इस तरह से पुनरुत्थानवादी शक्तियां जो हैं वे देश को बार-बार. . . (व्यवधान) फिर से कहीं एक विचार पर भी सहमत नहीं होने देना चाहती हैं तथा समाज में व्यक्ति की. . . (व्यवधान) वह उसको, व्यवस्था को भंग करना चाहती हैं तो इस तरह से देश के. . . (व्यवधान)

उपसभापति: बस वीणा वर्मा जी।

श्रीमती वीणा वर्मा: महिलाओं के बारे में भ्रामक विचार जो फैलाए जा रहे हैं उनके बारे में जांच करनी चाहिए।

प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा: (दिल्ली): महोदया, मैं एसोसिएट करना चाहता हूं इस बात से कि महिलाओं को वेद पढ़ने का अधिकार, महिलाओं को वेदों का ज्ञान रखने का अधिकार निश्चित रूप से है और कोई भी व्यक्ति यदि यह कहता है कि महिलाओं को वेद नहीं पढ़ना चाहिए या वेद की ऋचाएं नहीं बोलनी चाहिए तो उसको हम स्वीकार नहीं करते। गार्गी और मैत्रयी ने वेदों की ऋचाएं लिखीं थीं। बहुत सी महिलाओं ने वेदों की ऋचाएं लिखी हैं, वेदों का ज्ञान प्राप्त किया है, वेदों का ज्ञान दिया है और मातृ शक्ति विशेषकर भारत में महिलाओं के विषय में इस प्रकार की कोई निषेध या किसी और वर्ग के लिए वेद विश्व का ज्ञान है, किसी वर्ग के लिए विशेषकर महिलाओं के लिए उसका निषेध होने का प्रश्न पैदा नहीं होना चाहिए। कोई बड़े से बड़ा धार्मिक व्यक्ति अगर यह बात कहता है तो हमारी राय में वह उचित नहीं है।

SHRIMATI JAYANTHl NATARAJAN (.Tamil Nadu): Madam, the Shankaracharya of the Badrikashram Dham has said that women should not recite the Vedas. *(Interruptions) I* am sharing some information with the House. He says that women should not recite the Vedas because he says (hat if they recite the Mantras, they would not be able to co'nceive children. I think it is the best contraception if you allow them to recite the Mantras.

THE DEPUTY CHAIRMAN: It is a very good suggestion.

SHRIMATI JAYANTHl NATARA* JAN: It is the best contraception.

THE TINDIVANAM G. VENKATRAMAN (Tamil Nadu). Madam, while associating myself with this I would say just one thing. Nowadays, all these Acharyas are doing nothing except poking their nose into politics. They are indulging in more politics than concerning themselves with religion, which is their field. That is why there is more evil. They have no business to say such nonsensical things. 'Ibis should be put an end to.

श्रीमती चन्द्रकला पांडेय: (पश्चिमी बंगाल): मैडम, मैं वीणा वर्मा जी से अपने आपको सम्बद्ध करना चाहूंगी और यह भी चाहूंगी कि इस तरह के वक्तव्य जो महिलाओं को दूसरे दर्जे का नागरिक सिद्ध करवाते हैं उनकी निंदा की जाए

श्रौर महिला सांसदों की श्रोर से शंकराचार्य जी को कोई मैसेज भेजा जाए कि इस तरह् के कथन श्रौर वक्तव्य न दें।

उपसभापति: महिलाश्रों के श्रलावा पुरुषों से भी भेज दिया। मि० मल्होत्रा तो इस बारे में बहुत श्रच्छा बोले हैं।

Need to provide safety *to* Indian National in Yemen

SHRI JOHN F. FERNANDES (Goa): Madam, there are over 7000 Indian nationals now trapped in Yemen. We know that a civil war is going on there at present. The Indian Mission has advised the Indian nationals to stay indoors. Over one week has gone by. There is the problem of starvation. Moreover, would they be saved from the Scud missiles? Madam, we find that yesterday, the U.S.A. had airlifted the U.S., German, British and Egyptian nationals. They have airlifted them and kept them in Riyadh. We heard *of* the radio today that even the United Nations is going airlift its staff. I do not know what the Indian Government is doing when our people are starving there. They cannot be saved from the Scud missiles. What is the Government doing? I think it is appropriate for the External Affairs Minister to come out with a statement on this and tell us what the Government is doing to airlift them and bring them to safety, to some neighbouring country. The Government should come out with a statement as to when they are going to airlift the Indian nationals trapped in Yemen.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The hon. Member has raised a very impor tant point. The Government is here. Please convey it to the External Affairs Minister to come and make a statement on it. The Indian nationals are there in Yemen. It is going through a crisis, a civil war. The people are worried. They want to know. The families are worried whether they are safe, they are alive. Please come back to the House with some information as to whether the Government is going to airlift them.

SHRI JOHN F. FERNANDES: Thank you, Madam.

[उपसभाध्यक्ष (सैयद सिब्ते रजी) पीठासीन हुए]

Water crisis in Delhi

श्री श्रो. पी. कोहली : (दिल्ली) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं दिल्लीवासियों को तकलीफ दे रही एक महत्वपूर्ण समस्या की तरफ श्रापका ध्यान खींचना चाहता हूं।

दिल्ली पानी की कमी के गहरे संकट के दौर से गुजर रहा है। दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान श्रौर उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्रियों की हाल में हुई बैठक समस्या का समाधान ढूंढने में श्रसफल रही है। उपसभाध्यक्ष जी, वजीराबाद का सामान्य जलस्तर 674.5 फुट रहना चाहिए, लेकिन यह जलस्तर गिरकर 673.4 फुट रह गया है श्रर्थात् जलस्तर प्रतिदिन 0.1 फुट गिर रहा है। इससे वजीराबाद श्रौर चंद्रावल जल-संयंत्र बंद होने की श्राशंका पैदा हो गयी है। दिल्ली में पिछले वर्ष इन दिनों पानी की उपलब्धता 5–6 सौ क्यूसेक थी पर इस वर्ष 475 क्यसेक है। दिल्ली के कई क्षेत्रों में पानी की श्रापूर्ति में कटौती की गयी है। श्रनेक बस्तियों में हाहाकार मचा हुश्रा है लेकिन केन्द्र सरकार की श्रोर से प्रस्तावित समझौते में दिल्ली को श्रतिरिक्त 5 सौ क्यूसेक पानी देने की व्यवस्था की गयी है। जब तक इस समझौते पर अंतिम निर्णय नहीं हो जाता तब तक श्रंतरिम उपाय के रूप में दिल्ली को कम से-कम 2 सौ क्यूसेक पानी देने की दिल्ली के मुख्य मंत्री की प्रार्थना को तत्काल स्वीकार किया जाना चाहिए। मैं चाहूंगा कि प्रधान मंत्री जी इस मामले में हस्तक्षप करें श्रौर दिल्ली को हरियाणा से कम-से कम श्रंतरिम उपाय के रूप में 2 सौ क्यूसेक पानी दिलवाने की व्यवस्था करें, ऐसा मेरा श्रनरोध है।